मोटी चाची मायके गई

मोटी चाची मायके गई

रूपान्तरकार : फ़ाङ य्वान
चित्रकार : चओ श्येनछे

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

मोटी चाची पूर्वी गांव में रहती थी। वह बड़ी लापरवाह थी। उसका एक मोटा-सा नन्हा बेटा भी था।

एक रात मोटी चाची अपने नन्हें बेटे के साथ मीठी नीद ले रही थी। उसने सपना देखा कि उसकी मां अचानक बीमार पड़ गई है।

मोटी चाची ने सपने को सच समझ लिया। वह रो पड़ी और फौरन अपनी मां के घर जाने को तैयार हो गई।

उसने झटपट कपड़े पहन लिए और अपने बेटे को गोद में उठा मायके की ओर चल दी।

मोटी चाची की मां पश्चिमी गांव में रहती थी। पूर्वी गांव से वह केवल दो किलोमीटर दूर था। मोटी चाची तेजी से दौड़ रही थी। वह हांफने लगी। उसके कपड़े पसीने से तरबतर हो गए।

चिन्नी गांव में पहुंचने से पहले, उसे एक बड़ा-सा
खेत दिखाई दिया, जिसमें बड़े-बड़े पेठे लगे हुए थे।

जल्दी पहुंचने के लिए वह पेठे के खेत के बीच से चलने लगी। लापरवाही की वजह से अचानक उसका पांव पेठे की एक बेल से उलझ गया और वह अपने बेटे समेत जमीन पर गिर पड़ी।

खेत में गुप अंधेरा था। मोटी चाची ने आसपास टटोलकर बेटे को गोद में उठा लिया और मायके की ओर दौड़ पड़ी।

वह सोच रही थी : "मेरा बेटा कितना अच्छा है ! जमीन पर गिरने के बाद भी रोया नहीं !"

मोटी चाची जल्दी ही मायके पहुंच गई। उसने जोर-जोर से दरवाजा खटखटाया और चिल्लाई : "दरवाजा खोलो! जल्दी से दरवाजा खोलो!"

दरवाजा खुला तो मोटी चाची अचम्भे में पड़ गई। मां ने ही दरवाजा खोला था। आधी रात में बेटी को दरवाजे पर खड़ा देख मां को बड़ा ताज्जुब हुआ। वह नहीं समझ पाई कि बेटी आखिर इस समय किसलिए आई है!

मोटी चाची पलभर में सारी बात समझ गई। वह बोली : "ओह, शायद मैंने कोई सपना देखा है !"

मां ने उससे पूछा : "इतनी गरमी में तुम रूईदार कोट क्यों पहने हो?" मोटी चाची ने अपने बदन पर नजर डाली, तो वह हंस पड़ी और बोली : "अरे, शायद इसीलिए मुझे इतना पसीना आ रहा है। यह तो बेटे के बापू का जाड़ों का कोट है। मैंने गलती से पहन लिया है!"

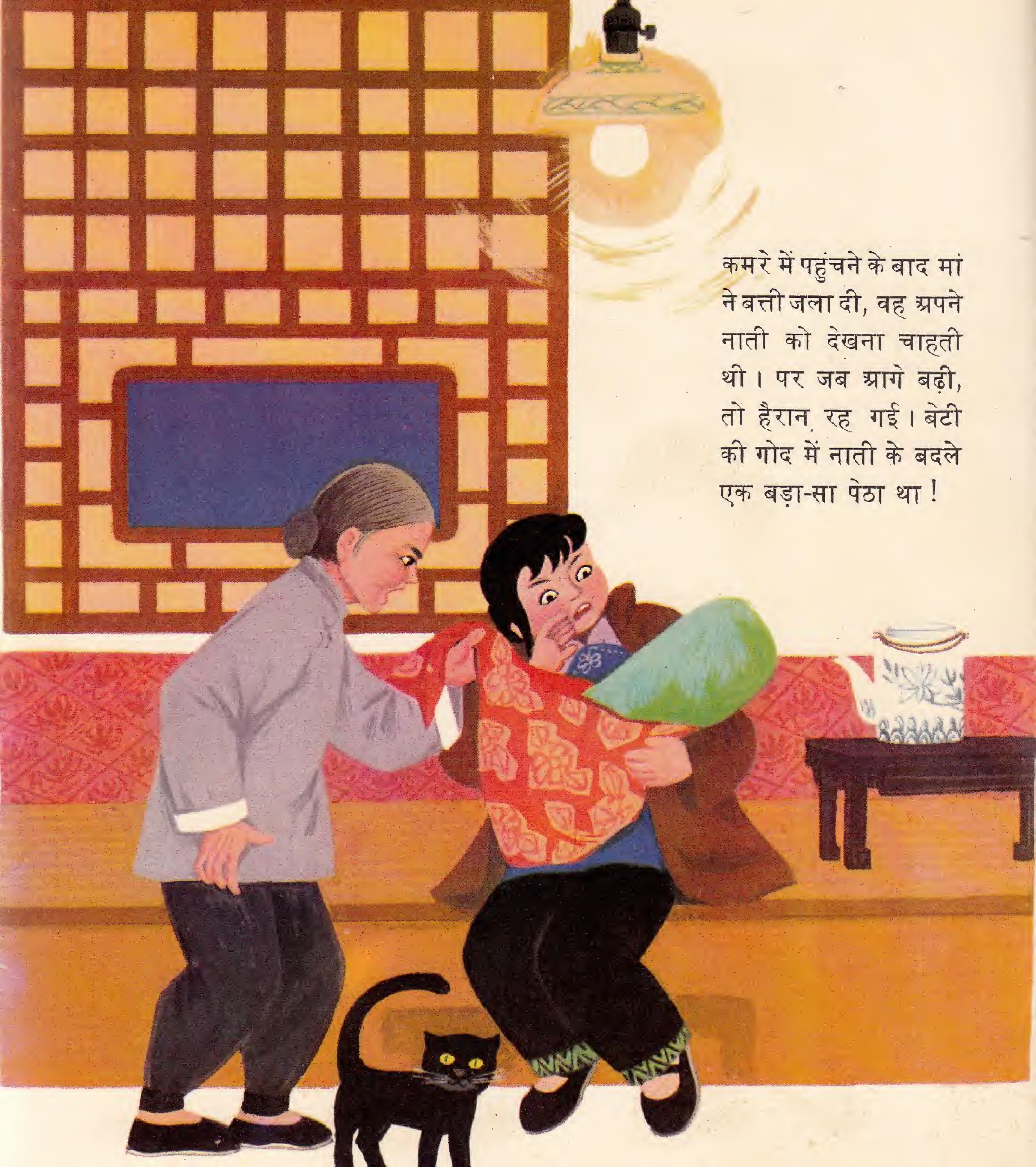

कमरे में पहुंचने के बाद मां ने बत्ती जला दी, वह अपने नाती को देखना चाहती थी। पर जब आगे बढ़ी, तो हैरान रह गई। बेटी की गोद में नाती के बदले एक बड़ा-सा पेठा था!

मोटी चाची फ़ौरन चिल्ला पड़ी : "गजब हो गया है ! मेरा बेटा शायद खेत में रह गया है !" यह कहकर वह उल्टे पांव पेठे के खेत की तरफ लौट पड़ी।

मोटी चाची ने पूरा खेत छान मारा, पर बेटा कहीं न मिला ।

अचानक उसका पांव किसी मुलायम चीज से टकराया। उसे गोद में उठाकर वह खुशी से बोल पड़ी : "हे भगवान ! मेरा प्यारा बेटा मुझे मिल गया है !"

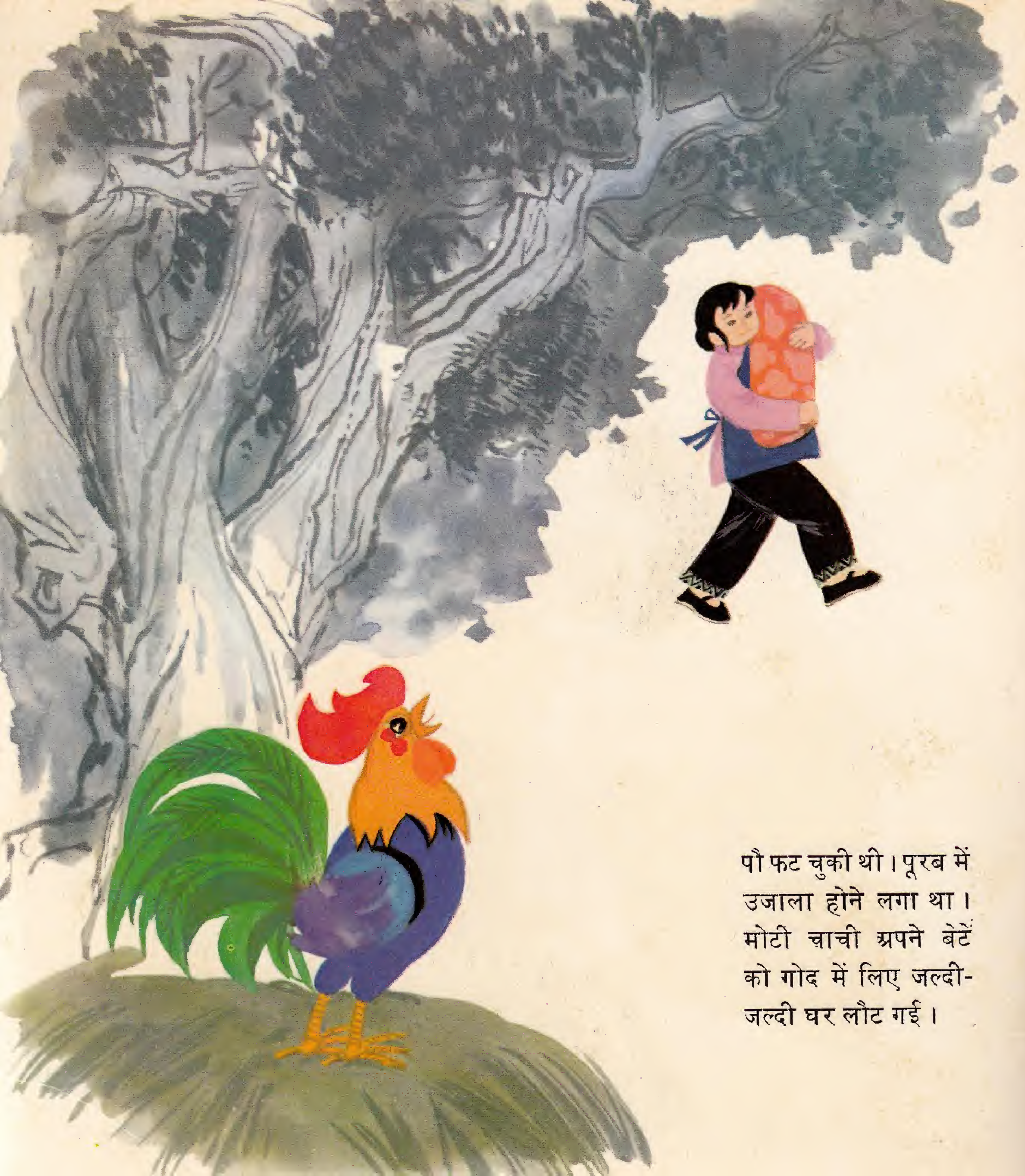

पौ फट चुकी थी। पूरब में उजाला होने लगा था। मोटी चाची अपने बेटे को गोद में लिए जल्दी-जल्दी घर लौट गई।

घर पहुंचकर उसने पलंग पर नजर डाली, तो वह हक्की-बक्की रह गई! उसका प्यारा बेटा बिस्तर पर मीठी नींद सो रहा था, जबकि मोटी चाची अपनी गोद में घर का एक फूलदार तकिया उठाए हुए थी!

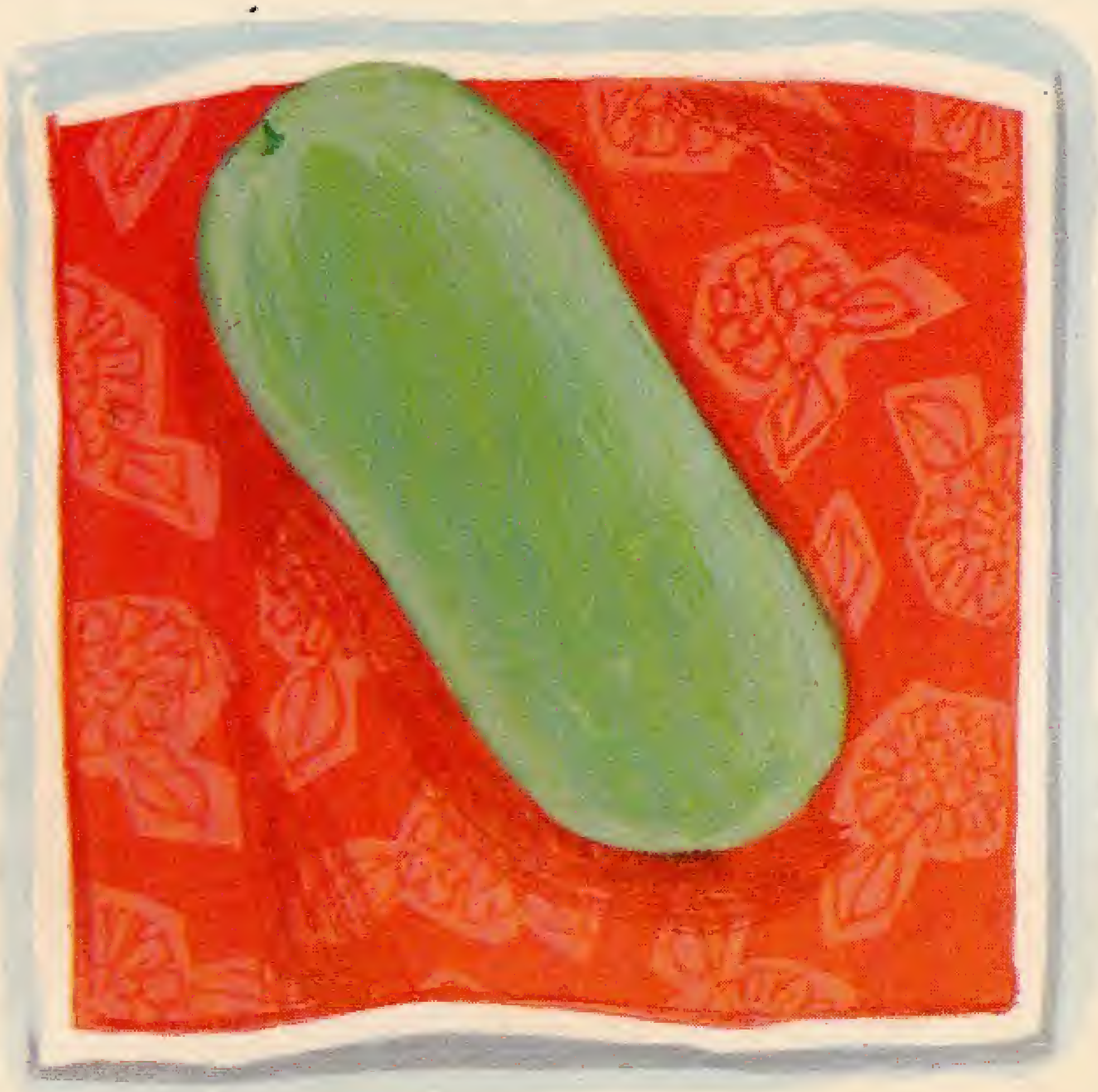

प्रथम संस्करण　१९८२

प्रकाशक : **विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह**
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : **जातीय मुद्रणालय**

वितरक : **चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र (क्वोची शूत्येन)**
पो. आ. बाक्स ३९९, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

胖 嫂 回 娘 家
方原 改编
周菀翻 绘
*
外文出版社出版
（中国北京百万庄路24号）
民族印刷厂印刷
中国国际书店发行
（北京399信箱）
1982年（20开）第一版
编号：（印地）8050—2183
00060
88—H—197P

Rs 2 - P. 60